श्री रविव्रत विधान

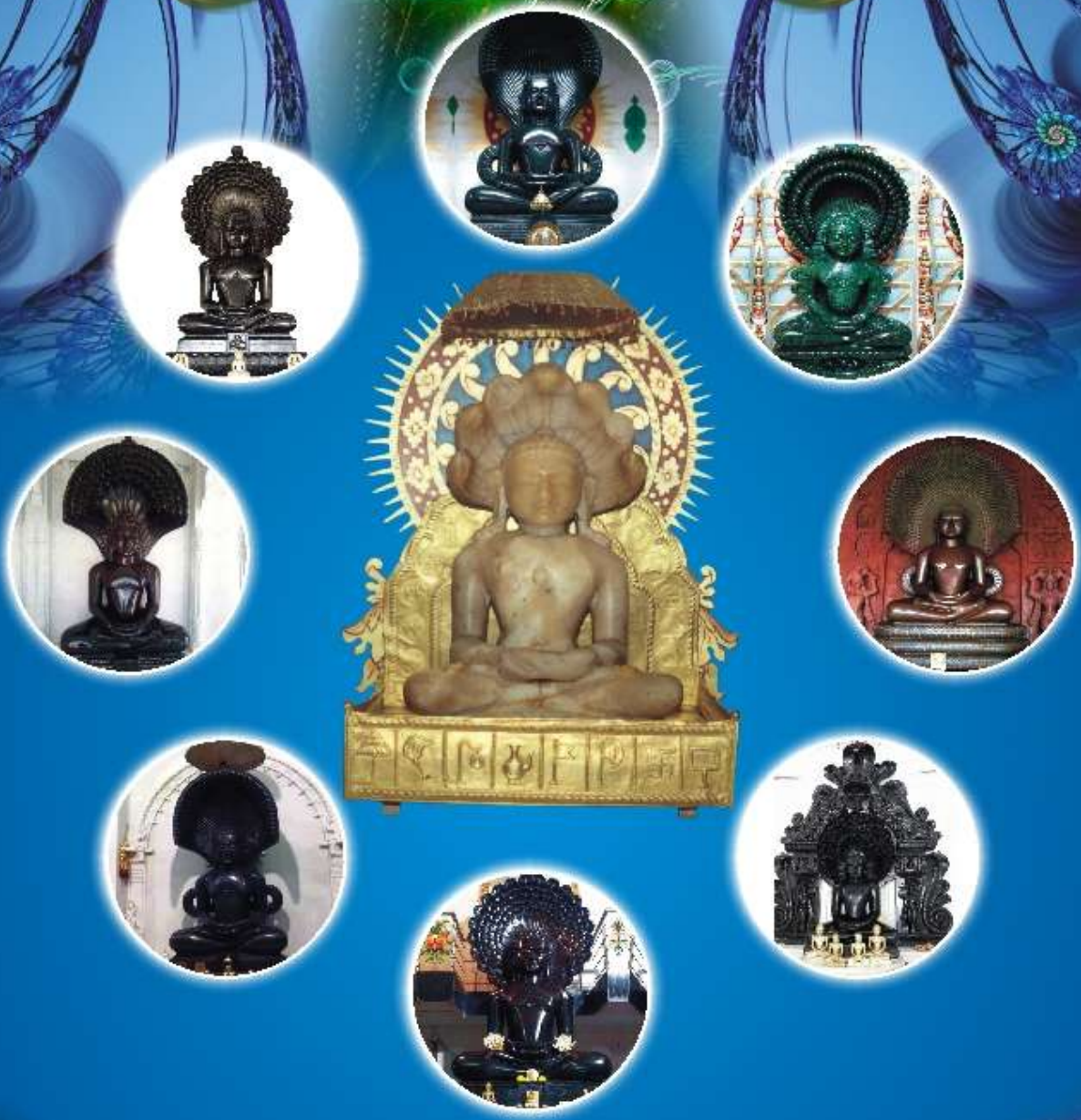

संपादन : आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार : आर्यिका आस्थाश्री माताजी

रविव्रत विधान

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव
वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

संपादन

प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचनाकार

गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	पृ. सं.
1.	आशीर्वाद–ग.ग.आचार्य कुंथुसागरजी	7
2.	शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें–आचार्य कनकनन्दीजी	8
3.	सम्पादकीय–आशीर्वाद – आचार्य गुप्तिनन्दीजी	10
4.	जैन धर्म में भावना का महत्त्व – मुनि महिमासागरजी	15
5.	धर्म कर्म निवर्हणम् – मुनि सुयशगुप्तजी	17
6.	भादो भी होगा भक्ति का सावन – मुनि चन्द्रगुप्तजी	18
7.	स्व कथ्यम् – गणिनी आर्यिका क्षमाश्री माताजी	19
8.	तीर्थंकर पद की हेतू, सोलहकारण भावना– गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी	20
9.	विधान मंडल	37
10.	विनय पाठ	40
11.	पूजा आरम्भ	41
12.	नित्यमह पूजन–गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी	46
13.	श्री चौबीस तीर्थंकर पूजन–आचार्य गुप्तिनंदीजी	50
14.	ऋद्धि मंत्र	53

श्री रविव्रत विधान

73.	श्री रविव्रत विधान	318
74.	प्रथम वलय	320
75.	द्वितीय वलय	322
76.	तृतीय वलय	324
77.	चतुर्थ वलय	327
78.	पंचम वलय	329
79.	षष्ठम् वलय	331
80.	सप्तम वलय	333
81.	अष्टम वलय	336
82.	नवम वलय	338
83.	समुच्चय जयमाला	340
84	प्रशस्ति	343
85.	आरती	344
86.	चिंतामणी पार्श्वनाथ की आरती	345

आशीर्वाद

पुण्य ही जीव की सद्गति कराता है, सद्गति से मनुष्य को मोक्ष प्राप्त होता है, सच्चा सुख उसी को कहते हैं। संसारी जीव को सच्चे सुख के लिये ही प्रयत्न करना चाहिए, आचार्यों ने इसीलिये देवपूजा का विधान गृहस्थों के लिये अनिवार्य किया है। सद् गृहस्थ को प्रतिदिन जिनपूजा करना चाहिए। द्रव्यसहित भावपूजा करना चाहिये, पूजा पुण्यानुबंधी पुण्य कमाने के लिये है। **आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी** ने त्रिकाल चौबीसी और पंचकल्याणक विधान लिखे हैं और **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान आदि आठ विधानों को लिखा है, व्रत विधान करने से जीव को परम्परा से मुक्ति प्राप्ति होती है, गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी का परिश्रम कब सार्थक होगा, जब सद्ग्रहस्थ व्रत करें, विधान करें। आप सभी विधानों को करके अवश्य पुण्य लाभ उठावें, ऐसा मेरा कहना है। गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी को, प्रकाशक को मेरा आशीर्वाद।

-ग.ग. कुन्थुसागर

शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें

राग – सुवर्ण पात्री मंगल आरती.. मराठी राग (चौपाई)

(तीर्थंकरों का सामान्य वर्णन)

आत्म उद्धारक विश्व प्रबोधक अनन्त ज्ञान सुख वीर्यवान्।
अनन्त दर्श के स्वामी भगवन्, घातीकर्म नाशक अरहन्॥ टेक॥

सोलह भावना बल पर बनते तीर्थंकर केवली महान्।
अतिशय युक्त पञ्चकल्याणों से होते हैं प्रभु शोभितवान्॥1॥

गर्भ से पूर्व होती रत्नवृष्टि माता देखती स्वप्न महान्।
देवों के द्वारा होती पूजित जिनेश माता पुण्य से जान॥2॥

जन्म होने पर होता अभिषेक पाण्डुक शिला पर महान्।
हजार आठ कलश के द्वारा देव करे उत्सव महान्॥3॥

राजकुमार राजा चक्री बन करते प्रजापालन श्रीमान्।
कोई बाल ब्रह्मचारी होते कोई विवाह भी करते जान॥4॥

बाह्य अन्तःकरणों से जब होता वैराग्य सौभाग्य जान।
लौकान्तिक करते अनुमोदन दिव्य पालकी से वनगमन॥5॥

सिद्धों को करके सुमिरन पञ्चमुष्टि केशलोंच करें महान्।
अन्तरंग-बाह्य परिग्रह तजकर निर्ग्रन्थ रूप धरे महान्॥6॥

गर्भ से होते त्रिज्ञानधारी क्षायिक सम्यग्दृष्टि महान्।
दीक्षा से होता मनःपर्यय भी चौंसठ ऋद्धि अलौकिक जान॥7॥

बाह्य-आभ्यन्तर तपस्या करते सात्विक आहार लेते जान।
इसी से होते पञ्च आश्चर्य आहारदान का गुण बखान॥8॥

शुक्ल ध्यान से श्रेणी आरोहण करके घाती कर्म करें हनन।
अनन्त चतुष्टय धारी बनकर साक्षात् तीर्थेश जान॥9॥

समवशरण की रचना होती देवकृत अति मनोहर/(चमत्कार)।
गन्धकुटी बाहर सभा मध्ये विराजमान होते भगवान्/(जिनवर)॥10॥

सर्वभाषामयी श्रीवाणी खिरे श्रवण करे पशु देव नर।
गणधर उसे गुन्थित करते द्वादश जिनवाणी का सार॥11॥

हमारी संघस्था उदीयमाना कवियित्री **गणिनी आर्यिका श्री आस्थाश्री** के द्वारा रचित **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'**, ये अनेक विधान लिखे हैं उनका सदुपयोग करके विश्व मानव सातिशय पुण्यार्जन करें एवं परम्परा से मोक्ष प्राप्त करें ऐसी मेरी शुभकामनायें हैं। **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री** भी रत्नत्रय की साधना एवं सोलहकारण भावना के द्वारा स्व-पर विश्वकल्याण करते हुये स्वात्मोपलब्धि करें ऐसा शुभाशीर्वाद एवं शुभकामनायें सह-

-आचार्य कनकनंदी
खाखड (उदयपुर) राज.
28-5-2012

सम्पादकीय-आशीर्वाद

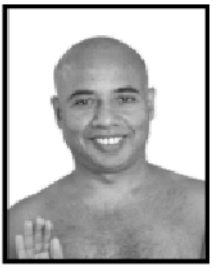

सोलहकारण दिव्य भावना, तीर्थंकर पद की दातार।
दशलक्षण आतम के लक्षण, करते पापों का परिहार॥
उनको भायें निशदिन ध्यायें, करने निज आतम उद्धार।
उनके धारक श्री जिन मुनि को, करते वंदन बारम्बार॥
पंचमेरु और नंदीश्वर के, जिनवर का हम करते ध्यान।
रविव्रत के श्री पार्श्वनाथ से, हो जाये मेरा उत्थान॥

भावनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जैसे–सद्भावना, दुर्भावना, प्रशस्त भावना, अप्रशस्त भावना। प्रशस्त भावनाओं में बारह भावना, मेरी भावना, सोलहकारण भावनाओं आदि का समावेश होता है। इन सभी भावनाओं में सोलहकारण भावना सातिशय पुण्य भावना है।

जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि जैन आगम के अनुसार यदि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक, भव्य पुण्यात्मा जीव किसी तीर्थंकरादि केवली या श्रुतकेवली के पादमूल में विधिबद्ध ढंग से इन सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करता है तो वह तीर्थंकर पुण्य प्रकृति का बंध कर सकता हैं।

इसके अतिरिक्त षोडशकारण की व्रत कथा के अनुसार मुनियों के प्रति दुर्व्यवहार करने का फल भोगने वाली कुरूपा निंदनीया कालभैरवी कन्या ने पश्चात्ताप के साथ इस व्रत को सम्पन्न किया। जिससे मुनि निंदा के पाप से बचकर उसी कन्या ने आगे स्त्रीलिंग को छेदन कर, सीमंधर तीर्थंकर के महान् पद को प्राप्त किया। अर्थात् मुनि निंदा के प्रायश्चित्त हेतु भी यह व्रत करना चाहिए।

वर्ष में तीन बार आने वाला यह पर्व हमें दिशाबोध देता है कि तीर्थंकर कैसे तीर्थंकर बने ?

हमारे आदर्श क्या हो ? साधारण मानव भी आगे कैसे तीर्थंकर बन सकता है।

इसी प्रकार दशलक्षण धर्म, आत्मा का धर्म है। जैन संस्कृति में दशलक्षण पर्व का विशेष महत्त्व है। पर्वों में महापर्व, पर्वाधिराज पर्यूषण को माना गया है। पर्यूषण पर्व भी वर्ष में तीन बार आता है किन्तु भाद्रपद मास में आने वाला दशलक्षण पर्व जैन समाज में विशेष रूप से मनाया जाता है। सम्पूर्ण भारतवर्ष के जैन धर्मावलम्बी श्रावक चाहे देश में हो या विदेश में रहे। वह अनिवार्य रूप से भाद्रपद मास के पर्यूषण पर्व पर

अपनी सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए दस दिनों तक नियम संयम के साथ दशलक्षण धर्म की महा–आराधना करते हैं।

धूमधाम से गीत, संगीत, वाद्ययंत्रों के साथ पूजा विधान करते हैं। इसलिए समय–समय पर हमारे आचार्यों, मुनिराजों, आर्यिका माताजी व श्रावकों ने कभी प्राकृत भाषा में, कभी संस्कृत में कभी ढुढ़ारी भाषा में तो कभी हिन्दी में छोटे या बड़े रूप में अनेक प्रकार से सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है।

इसी श्रृंखला में **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने अपनी भक्ति काव्य कला का सद्पयोग करते हुए **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, तत्त्वार्थ सूत्र, णमोकार, एकीभाव एवं चंदन षष्ठी विधान'** को लिखा है। माताजी एक ऐसी पुण्यात्मा है जिन्होंने मात्र तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में घर, परिवार त्याग कर ''आर्यिका विशालमति माताजी'' के मार्गदर्शन में अपनी अध्यात्म यात्रा प्रारम्भ की। तत्पश्चात् जैनागम का गहन अध्ययन करने के लिये **'वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव'** का पावन सान्निध्य प्राप्त किया। धर्मपिता आचार्य गुरुदेव ने जहाँ आपको शास्त्राभ्यास कराया।

वहीं मर्यादा श्रमणमोत्तम आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव ने अपनी प्रथम शिष्या की आर्यिका दीक्षा अपने दीक्षा गुरु **गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुंथुसागरजी गुरुदेव** से करवायी और इस तरह ब्रह्मचारिणी कुमारी लीला 17 फरवरी, 1997 को गुजरात प्रांत के अहमदाबाद नगर में **आर्यिका आस्थाश्री** बन गई। सन् 1994 से निरन्तर संघ में रहते हुए आपकी अध्यात्म साधना निरन्तर चलती रही।

दोहा– पंचमेरु के जिन भवन, उनमें जिन भगवान।
उनको ध्याऊँ रात–दिन, दर्शन दो भगवान॥

जैन संस्कृति में पंचमेरु का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ढाई द्वीप में पाँच मेरु होते हैं। जम्बूद्वीप के बीचोंबीच प्रथम सुमेरु पर्वत है। धातकी खण्ड द्वीप के पूर्व और पश्चिम भाग में विजय व अचल मेरु हैं। पुष्करार्द्ध द्वीप के पूर्व व पश्चिम में मन्दर व विद्युन्माली मेरु हैं।

इनमें से प्रथम सुदर्शन मेरु की ऊँचाई एक लाख चालीस योजन है व अन्य चार मेरु पर्वतों की ऊँचाई चौरासी हजार योजन बतायी है। इन पाँच मेरुओं में (1) भद्रशाल (2) नन्दन (3) सौमनस (4) पाण्डुक नामक चार वन हैं। चारों वनों की चारों दिशाओं में चार–चार जिनालय हैं। प्रत्येक जिनालय में 500 धनुष ऊँची 108–108 जिन प्रतिमायें हैं। इस प्रकार एक मेरु के चारों वनों के 16 चैत्यालयों

की 108-108 जिन प्रतिमायें मिलाने पर एक मेरु की 1728 जिनप्रतिमायें होती हैं। जैन शास्त्रों में पाँचों मेरु की कुल आठ हजार छह सौ चालीस जिन प्रतिमायें बनायी हैं। उनमें सभी प्रतिमाओं में प्रत्येक के समीप सर्वाण्ह यक्ष, सनत्कुमार यक्ष व श्रीदेवी और श्रुतदेवी की प्रतिमा भी शाश्वत स्थित है। प्रत्येक जिन प्रतिमा अष्ट महाप्रतिहार्य व अष्ट मंगल द्रव्य से विभूषित है।

पाँचों मेरु के पाण्डुक वनों की चार विदिशाओं में चार-चार शिलायें हैं। उनके क्रम से (1) पाण्डुक शिला (2) पाण्डुकम्बला शिला (3) रक्ता शिला और (4) रक्तकम्बला शिला नाम हैं। इन शिलाओं पर निर्धारित (भरत, ऐरावत, पूर्व, पश्चिम विदेह) क्षेत्र के बाल तीर्थंकरों का जन्माभिषेक होता है।

हम इसे प्रथम सुमेरु पर्वत से समझते हैं। सुमेरु के पाण्डुक वन की ईशान दिशा में स्थित पाण्डुक शिला पर भरत क्षेत्र के तीर्थंकरों का, आग्नेय दिशा में स्थित पाण्डुकम्बला शिला पर पश्चिम विदेह के तीर्थंकरों का, नैऋत्य दिशा में स्थित रक्ता शिला पर ऐरावत क्षेत्र के तीर्थंकरों का और वायव्य दिशा में स्थित रक्तकम्बला शिला पर पूर्व विदेह के तीर्थंकरों का अभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य क्षेत्र के मेरु पर्वत के विषय में जानना चाहिए।

उन शिलाओं पर एक-एक सिंहासन और दो-दो भद्रासन होते हैं। जिनमें से सिंहासन पर बाल तीर्थंकर को विराजमान करके दोनों भद्रासनों पर सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी व ईशान इन्द्र-इन्द्राणी बैठकर 1008 कलशों में भरे क्षीरसागर के फल से बाल तीर्थंकर का जन्माभिषेक करते हैं। वह क्षीर सागर का जल भी दूध के समान स्पर्श-रस-गंध-वर्ण वाला होता है। जैनाचार्यों ने 1008 कलश 8 योजन (96 किमी.) गहरे, चार योजन (48 किमी.) चौड़े व मुख 1 योजन (12 किमी.) का बताया है। ऐसे बड़े-बड़े 1008 कलशों से श्री बाल तीर्थंकर भगवान का जन्माभिषेक होता है। इसी प्रकार अन्य चार मेरु पर्वतों व धातकी खण्ड द्वीप व पुष्करार्ध द्वीप के विषय में जानना चाहिए। पाँचों मेरु का सुन्दर-सा वर्णन 'श्री तिलोयपण्णत्ति', 'श्री त्रिलोक सार', 'श्री हरिवंश पुराण' आदि ग्रन्थों में विस्तार से मिलता है।

पंचमेरु को लक्ष्य करके ही पंचमेरु पुष्पाञ्जलि व्रत किया जाता है। इस व्रत के प्रभाव से एक ब्राह्मण पुत्री ने क्रम से देवपद, मनुष्य होकर चक्रवर्ती पद व आगे उसी भव से सिद्धपद प्राप्त किया।

प्रत्येक वर्ष में तीन बार आने वाले दशलक्षण पर्व की पंचमी से नवमी तक यह व्रत किया जाता है। व्रत में शक्ति अनुसार उपवास या एकाशन करके पंचमेरु का विधान किया जाता है।

दोहा– जम्बुद्वीप से आठवाँ नन्दीश्वर हितकार।
उसके सब जिनबिम्ब को वन्दन बारम्बार॥

संघ में 'श्री तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थराज'' का स्वाध्याय चल रहा है उसमें मध्यलोक के आठवें नन्दीश्वर द्वीप का विस्तृत वर्णन पढ़ा। पढ़कर मन में अत्यानंद हुआ। उस समय ही **गणिनी आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने उनके द्वारा सृजित नंदीश्वर विधान की नवीन रचना अवलोकनार्थ दी। उसमें तिलोय पण्णत्ति को आधार लेकर माताजी ने 'नन्दीश्वर विधान' में नंदीश्वर द्वीप का, वहाँ–वहाँ के वैभव और पूजा विधि का बहुत सुन्दर वर्णन किया है। नंदीश्वर व्रत कथा से इस व्रत विधान की महिमा ज्ञात होती है। व्रत कथा के अनुसार कुबेर दत्त वैश्य और सुन्दरी सेठानी के पुत्र श्रीवर्मा ने नन्दीश्वर व्रत का विधिवत पालन किया। जिसके प्रभाव से वे स्वर्गादिक सुख भोगकर आगे हरिषेण चक्रवर्ती बने तथा उसी भव में पुनः व्रतकर आगे मुनि बने वा मोक्ष गये। व्रत के प्रभाव से अनंत वीर्य आगे चक्रवर्ती बना। जयकुमार सेनापति भगवान वृषभदेव के 72वें गणधर बने। इस व्रत की महिमा से कोटिभट् श्रीपाल का कोढ़ मिटा तथा आगे सर्वसुखों के साथ मोक्ष सुख भी प्राप्त हुआ। इत्यादि अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रन्थों में इस व्रत की महिमा बतलाते हैं। प्रस्तुत विधान में 52 अर्घ और 6 पूर्णार्घ हैं।

दोहा– पार्श्वनाथ भगवान हैं, सर्व सुखों की खान।
उनका रविव्रत श्रेष्ठ है, देता सिद्धी निधान॥

भगवान पार्श्वनाथ का पावन जीवन चरित्र समतामूलक है। उनकी दस भव की साधना क्षमा की साधना है। साहस व धैर्य की साधना है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने दस भवों में आये संघर्ष व उपसर्ग पर एकमात्र समता से सफलता प्राप्त की। उनके वैरी कमठ ने जितनी बार उनको दबाया, पीड़ित किया उतना ही भगवान ऊपर उठते गये, सफलता का शिखर प्राप्त करते गये। उन्होंने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया बल्कि क्रोध का सामना क्षमा से किया। उन्होंने क्रोध की अग्नि पर क्षमा का जल डाल दिया। भगवान को परेशान करने वाला स्वयं हर बार दुःख के महासागर में गिरता गया। भगवान पार्श्वनाथ का जीवन बताता है अच्छाई का फल अच्छा होता है और कमठ का जीवन बताता है बुराई का फल बुरा होता है। भगवान पार्श्वनाथ ने अपने पवित्र आचरण से बताया जीव का स्वभाव समता है, विषमता नहीं। उनकी समता कष्ट सहिष्णुता को सारे संसार ने सराहा तथा उन्हें अपना आदर्श माना। इसलिए आज भारत सहित सम्पूर्ण देश वा विदेश के सभी जिनालयों में सर्वाधिक भगवान पार्श्वनाथजी की प्रतिमायें विराजमान हैं। श्रावकों ने आचार्यों की प्रेरणा से उनकी प्रतिमा विराजमान की तो अनेक आचार्यों, मुनियों, भट्टारकों व कवियों ने उनके जीवन चरित्र को अनेक पुराण ग्रन्थों, कथा, नाटक, कविता–स्तोत्र व

पूजा में लिपिबद्ध किया। सबने अपनी शैली में भगवान का गुणानुवाद किया। भगवान पार्श्वनाथ के नाम से अनेक व्रत भी किये जाते हैं। उनमें रविव्रत व मुकुट सप्तमी व्रत विशेष हैं। सम्पूर्ण देश में सर्वाधिक प्रचलित व्रत रविव्रत है। रविव्रत भी अहंकारी के अहंकार को तोड़ने वाला और धनहीन को धनवान, दुःखियों को सर्वसुखी बनाने वाला व्रत हैं। इसकी कथा से हम व्रत के सम्पूर्ण रहस्य को जान सकते हैं। रविव्रत पर भी संस्कृत व हिन्दी में अनेक विधान देखने को मिलते हैं। इसी रविव्रत पर हमारी संघस्था आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने भी एक सुन्दर सारगर्भित स्वतंत्र रविव्रत विधान बनाया है। रविव्रत के 9 वर्ष के 9 वलयों के अर्घ में माताजी ने अपने ढंग से भगवान पार्श्वनाथ की भक्ति की है। साथ में हम प्रभु भक्ति कितने द्रव्यों से, कितने प्रकार से कर सकते हैं। यह संदेश भी विधान के अनेक छन्दों में दिया है।

इसमें 81 अर्घ व कुछ पूर्णार्घ है इस विधान में उन्होंने, दोहा, काव्य, शम्भु, सखी, नरेन्द्र, चौपाई, गीता आदि अनेक छन्दों का प्रयोग किया है। पूरा विधान सरल, सहज सुन्दर है।

नंदीश्वर विधान और भी अनेक विधानों की रचना की है व महासती चन्दना, सती मनोरमा आदि अनेक कथा साहित्य का भी सृजन किया है। एक साथ **'सोलहकारण, दशलक्षण, पंचमेरु, नंदीश्वर, रविव्रत, मोक्षशास्त्र, णमोकार, एकीभाव, चंदन षष्ठी विधान'** ये आठ विधान संयुक्त रूप में प्रकाशित होने जा रहे हैं। इन विधानों में माताजी ने शंभु, गीता, नरेन्द्र, जोगीरासा, कुसुमलता, चौपाई, अवतार, सखी, काव्य, दोहा, सोरठा, अडिल्ल, रोला, धत्ता, त्रिभंगी आदि अनेक छंदों का सुन्दर ढंग से प्रयोग किया है। मूल में **सोमसेनाचार्य व अभयनंदी आचार्य** ने प्राकृत व संस्कृत भाषा में सोलहकारण व दशलक्षण विधान की रचना की है व हिन्दी में **रईधु कवि** के दोनों विधान है। उन्हीं को आधार बनाकर वर्तमान भाषा शैली में नये ढंग से सरल छन्दों में, सुलझे सरस शब्दों में माताजी ने बहुत ही सुन्दर रचना की है।

विधान लेखन के क्षेत्र में माताजी का रचना धर्म अत्यन्त सराहनीय, प्रशंसनीय है। इसके साथ माताजी ने एकीभाव व णमोकार विधान आदि अनेकों की भी रचना की है, जो प्रकाशित हो गये हैं।

आपकी यह लेखनी अनवरत चलती रहे एवं यही श्रुत साधना, केवलज्ञान की प्राप्ति में कारण बने, यही उनके लिए आशीर्वाद है।

ग्रन्थ के प्रकाशक, मुद्रक व पूजक सभी को शुभाशीर्वाद।

–आचार्य गुप्तिनन्दी

जैन धर्म में व्रत का विशेष महत्त्व

दोहा- चिंतामणि श्री पार्श्व को, झुक-झुक करूँ प्रणाम।
संकटहर संकट हरो, जपूँ तुम्हारा नाम ।।

जिन भक्ति का उपदेश हमारे आचार्यों ने दिया है। इसलिये जैनधर्म में अनेक व्रत, उपवास बताये हैं। हर व्रत की महिमा अपने आप में अनूठी है। समय-समय पर श्रावक-श्राविकाएँ व्रत, उपवास, एकाशन आदि गुरु से लेकर करते आ रहे हैं। और जब तक गुरु हैं तब तक इसी तरह व्रत, उपवास करते रहेंगे।

श्रावक ही नहीं बल्कि साधु भी इन व्रतों को श्रद्धा से करते आये हैं। छोटा व्रत हो या बड़े से बड़ा व्रत हो, जिसने भी जितनी श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक जो भी व्रत किया है उसे उसका फल मिला है। व्रत करने से जीवों को धन, वैभव, स्वर्गादिक सुख और अंत में व्रत के फलस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है। हम कोई भी व्रत की कथा जब पढ़ते हैं तो अनेक कथा के अंत में व्रत करने वाले को निर्वाण की प्राप्ति हुई है, ऐसा व्रत का फल कथा के अंत में आता है।

हर व्रत की विधि आचार्यों ने अलग-अलग बताई है। किसी में अल्प भोजन करना बताया है, किसी में एकाशन, किसी में उपवास क्योंकि तप, त्याग, नियम,

संयम जो लिया जाता है वह शक्ति के अनुसार लिया जाता है। जिसमें जितनी शक्ति हो वह उतना त्याग करे। बस जो भी व्रत, उपवास करें उस दिन क्रोध नहीं करे। समता में रहे, विषमता बिल्कुल भी नहीं आने दे, क्रोध करने पर सारा व्रत उपवास निष्फल हो जाता है। कोई कितना भी आपको परेशान करे परन्तु हम अपनी समता नहीं छोड़े। जितना हो सके व्रत के दिन अधिक समय धर्मध्यान में बिताये। मंत्रजाप, पूजा, पाठ, स्वाध्याय आदि में अपने मन को लगावें। घर परिवार से निवृत्त होकर गुरुओं के पास या जिनालय में बैठकर अपना समय निकालें। घर-परिवार से दूर रहने पर राग-द्वेष नहीं होगा।

राग-द्वेष ही जीव को कर्मों का बंध कराता है। जितना-जितना हमारा राग-द्वेष-मोह कम होगा उतना ही, कर्मों का बंध कम होगा।

जब भी हमें व्रत लेना हो तो गुरु से व्रत लेना चाहिये। कभी भी व्रत लेकर छोड़ना नहीं चाहिये। व्रत खंडित हो जाये, टूट जाये तो पुनः गुरु से प्रायश्चित्त ले लेना चाहिये।

फिर से व्रत का अखंड रूप से पालन करना चाहिये। व्रत लेकर जो व्रत को छोड़ देता है वह महान् दुःखों का पात्र बनता है।

यह रविव्रत भी एक सेठानी ने लिया और परिवार के लोगों के द्वारा व्रत की निन्दा करने से उसने व्रत को छोड़ दिया। वे व्रत को तोड़ने के कारण दर-दर के भिखारी बन गये। कुछ वर्ष के बाद पुनः व्रत ग्रहण किया। व्रत के प्रभाव से उनके दिन पुनः फिर गये। सबने श्रद्धा से रविव्रत को अपनाया, पालन किया। जिससे उनको राज सम्मान प्राप्त हुआ, अंत में मोक्ष को प्राप्त किया।

यह रविवार व्रत 9 वर्ष तक किया जाता है। उत्तम, मध्यम, जघन्य रूप से भी व्रत होता है। जैसी शक्ति हो उस प्रकार व्रत का पालन करें। हर वर्ष में आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में जो अंतिम रविवार आये उस समय यह व्रत ग्रहण करें। इस प्रकार आषाढ़ महीने का एक और श्रावण महीने में चार, भाद्रमास के 4 कुल नो रविवार किये जाते हैं। हर वर्ष में अलग-अलग भोजन सामग्री इसमें बताई है। या फिर 81 उपवास भी कर सकते हैं। पूरी विधि रविवार व्रत की कथा को पढ़कर समझे। इस विधान में पूर्णार्घ को मिलाकर कुल 90 अर्घ चढ़ते हैं। जब भी हम रविव्रत करते हैं तो उद्यापन में यह विधान हमें करना चाहिये।

रविव्रत विधान का माण्डला

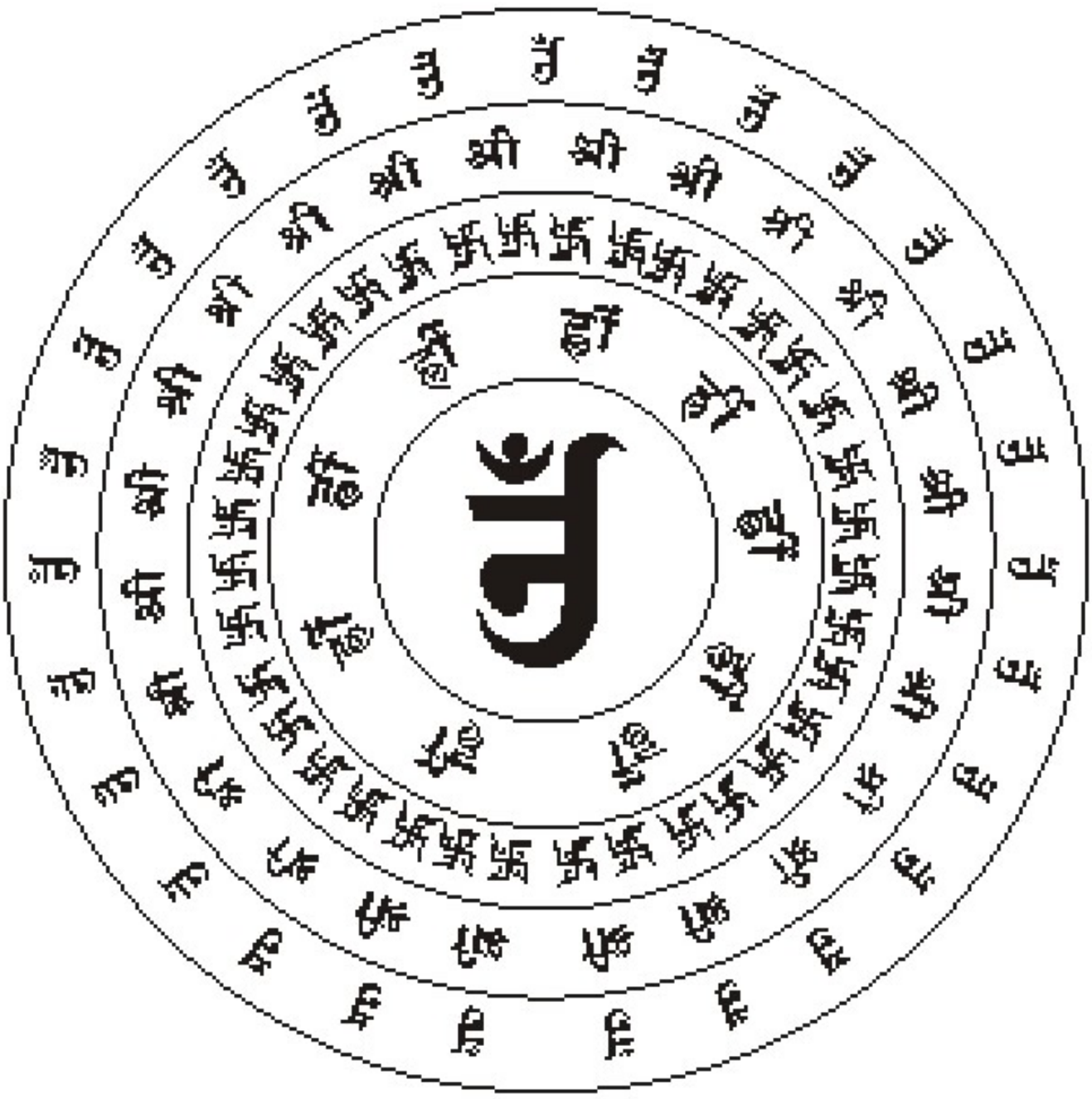

पूजन की थाली में निम्नलिखित श्लोक बोलते हुए स्वस्तिक बनायें व अंक लिखें–

श्लोक– **रयणत्तयं च वंदे चउवीस जिणे च सव्वदा वंदे।**
पञ्च गुरुणां वंदे चारण–चरणं च सव्वदा वंदे।।

3

2 卐 24

5

विनय पाठ

(दोहा)

प्रथम जिनेश्वर देव हो, वीतराग सर्वज्ञ।
हित उपदेशी नाथ तुम, ज्ञानरवि मर्मज्ञ।।1।।

केवलज्ञानी बन प्रभो, हरा जगत् अंधियार।
तीन लोक के बंधु बन, किया जगत् उपकार।।2।।

धर्म देशना से मिला, जग को दिव्य प्रकाश।
तव चरणों में नित रहे, यही करें अरदास।।3।।

कर्म बेड़ियाँ तोड़ने, भक्ति करें त्रयकाल।
तीन योग से हे प्रभो !, चरणों में नत भाल।।4।।

चतुर्गति भव भ्रमण से, तारों हमें जिनेश।
दयानिधि जिन ! कर दया, हरलो पाप विशेष।।5।।

प्रभुवर पूजा आपकी, सर्व रोग विनशाय।
विष भी अमृत हो प्रभो !, शत्रु मित्र बन जाय।।6।।

हलधर बलधर चक्रधर, अर्चा के उपहार।
परम्परा जिनभक्ति से, दे प्रभु पद उपहार॥7॥

बड़े पुण्य से जिन मिले, मिला प्रभु का द्वार।
मुक्त करो त्रय रोग से, विनती बारम्बार॥8॥

हम सेवक प्रभु आपके, हे अबोध ! अनजान।
राग-द्वेष अज्ञान हर, दे दो सच्चा ज्ञान॥9॥

मंगल उत्तम शरण है, मंगलमय जिनधर्म।
मंगलकारी सब गुरु, हरो हमारे कर्म॥10॥

चौबीसों जिनवर नमूँ, नमन पंच परमेश।
जिनवाणी गणधर गुरु, 'आस्था' नमें हमेश॥11॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूजा आरंभ (हिन्दी)

ॐ जय-जय-जय - नमोस्तु-नमोस्तु-नमोस्तु।
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं॥

(ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः परिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुरिपुष्पाञ्जलि क्षिपामि।

णमोकार मंत्र महिमा

(चौपाई)

अपवित्र या जन पवित्र हो, सुस्थित हो या दुस्थित भी हो।
नमस्कार मंत्रों को ध्यायें, पापों से छुटकारा पायें।।1।।

सर्व अवस्था में भी ध्यायें, पापी भी पावन बन जाये।
जो सुमिरे नित परमातम को, अन्दर बाहर शुचि बने वो।।2।।

अपराजित ये मंत्र कहाता, सब विघ्नों को दूर भगाता।
सब मंगल में मंगलकारी, प्रथम सुमंगल जग उपकारी।।3।।

महामंत्र णवकार हमारा, सब पापों से दे छुटकारा।
सब मंगल में प्रथम कहाता, महामंत्र मंगल कहलाता।।4।।

परम ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, सिद्धचक्र सुन्दर बीजाक्षर।
मैं मन-वच-काया से नमता, नमस्कार मंत्रों को करता।।5।।

अष्टकर्म से मुक्त जिनेश्वर, श्रीपति जिन मंदिर परमेश्वर।
सम्यक्त्वादि गुणों के स्वामी, नमस्कार मैं करता स्वामी।।6।।

जिनवर की संस्तुति करने से, मुक्ति मिले सारे विघ्नों से।
भूतादि का भय मिट जाता, विष निर्विष निश्चित हो जाता।।7।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे कल्याणमहंयजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिनइष्टमहंयजे।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत्सिद्ध आचार्य उपाध्याय सर्वसाधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदकचंदनतंदुलपुष्पकैश्चरूसुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवलमंगलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाममहंयजे॥3॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

(शंभु छंद)

श्री मज्जिनेन्द्र हो विश्ववंद्य, तुम तीन जगत के ईश्वर हो।
तुम चऊ अनंत गुण के धारी, स्याद्वाद धर्म परमेश्वर हो॥
श्री मूल संघ की विधि से मैं, अपना बहु पुण्य बढ़ाने को।
मैं मंगल पुष्प चढ़ाता हूँ, जिन पूजा यज्ञ रचाने को॥1॥

त्रैलोक्य गुरु हे जिनपुंगव !, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
अपने स्वभाव में सुस्थित जिन, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥
सम्पूर्ण रत्नत्रय के धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ।
हे समवशरण वैभव धारी, मैं तुमको पुष्प चढ़ाता हूँ॥2॥

अविराम प्रवाहित ज्ञानामृत, सागर को पुष्प समर्पित है।
निज परभावों के भेद विज्ञ, जिनवर को पुष्प समर्पित है॥
त्रिभुवन को सारे द्रव्यों के, नायक को पुष्प समर्पित है।
त्रैकालिक सर्व पदार्थों के, ज्ञायक को पुष्प समर्पित है॥3॥

पूजा के सारे द्रव्यों को, श्रुत सम्मत शुद्ध बनाया है।
यह भाव शुद्धि के अवलम्बन, द्रव्यों को शुद्ध सजाया है॥
शुचि परमातम का अवलम्बन, आतम को शुद्ध बनाता है।
उसको पाने हे जिन ! तेरी, यह पूजा भव्य रचाता है॥4॥

अर्हत् पुराण पुरुषोत्तम जिन, उनमें न सचमुच गुरुता है।
मैं भी स्वभाव से उन सम हूँ, मुझमें न निश्चय लघुता है॥

प्रभु से हो एकाकार मेरा, मैं ऐसी भक्ति रचाता हूँ।
केवल ज्ञानाग्नि में अपना, मैं पुण्य समग्र चढ़ाता हूँ॥5॥

ॐ ह्रीं जिनप्रतिमोऽपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल पाठ

(चौपाई)

वृषभ सुमंगल करे हमारा, अजित सुमंगल करे हमारा।
संभव स्वामी मंगलकारी, अभिनंदन हैं मंगलकारी॥1॥

सुमतिनाथ हैं मंगलकारी, पद्मप्रभु हैं मंगलकारी।
श्री सुपार्श्व जिन मंगलकारी, चंद्रप्रभु हैं मंगलकारी॥2॥

पुष्पदंत हैं मंगलकारी, शीतल स्वामी मंगलकारी।
श्री श्रेयांस जिन मंगलकारी, वासुपूज्य हैं मंगलकारी॥3॥

विमलनाथ हैं मंगलकारी, श्री अनंत जिन मंगलकारी।
धर्मनाथ हैं मंगलकारी, शांतिनाथ हैं मंगलकारी॥4॥

कुंथुनाथ हैं मंगलकारी, अरहनाथ हैं मंगलकारी।
मल्लिनाथ हैं मंगलकारी, मुनिसुव्रत हैं मंगलकारी॥5॥

नमि जिनवर हैं मंगलकारी, नेमीनाथ हैं मंगलकारी।
पार्श्वनाथ हैं मंगलकारी, वीर जिनेश्वर मंगलकारी॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

स्वस्ति मंगल विधान

(यहाँ प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिए।)

नित्य अचल क्षायिक ज्ञानधारी, विशुद्ध मनःपर्यय ज्ञानधारी।
देशावधि आदि युत ऋषि मुनिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में॥1॥

महाकोष्ठ बीजबुद्धि पदानुसारि, संभिन्न संश्रोतृ स्वयं बुद्धिधारी।
प्रत्येकबुद्ध-बोधिबुद्ध ऋषिवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।2।।

अभिन्नदशपूर्व-चतुर्दश पूर्वी, दिव्य मतिज्ञान महाबलधारी।
अष्टांगनिमित्त ज्ञाता ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।3।।

स्पर्श-चक्षु-कर्ण-घ्राण-रसना, आदि प्रबल इन्द्रिय के धारी।
महाशक्तिवन्त जिनमुनि-यति-ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणोंमें।।4।।

फल-तन्तु-नीर-जंघा-श्रेणी, पुष्प-बीज-अंकुर-रवि-अग्नि-गामी।
नभ-जल-वायुचारण ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।5।।

अणु-महालघु-गुरुऋद्धिधारी, सकामरूपित्व-वशित्वधारी।
वर्द्धमान बल के धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।6।।

मन औ वचनबल-कायबल ऋद्धि, प्राकाम्य-अप्रतिघात गुणधारी।
विक्रिया-क्रियाऋद्धि धारी गुरुवर, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।7।।

उग्रोग्रतप-दीप्त-तप-तप्ततपसी, अवस्थित-उग्रतप-महातपऋद्धि।
तपो-लब्धि आदि से युक्त ऋषिगण, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।8।।

आमर्ष-सर्वौषध ऋद्धिधारी, आषीर्विष-दृष्टिविष बल धारी।
सखिल्ल-विडजल्ल-मल्लौषधियुक्त, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।9।।

क्षीरास्रवी-घृतस्रावी मुनीश्वर, अमृत-मधु-महारस के धारी।
अक्षीणआलय-महानस आदि, स्वस्ति सदा हो उन चरणों में।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं

(9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

श्री नित्यमह पूजा

रचियित्री : ग. आर्यिका राजश्री माताजी

शंभु छन्द *(तर्ज– हे वीर तुम्हारे...)*

अरिहंत, सिद्ध, सूरी, पाठक, साधु और जिनवर चौबीसों।
गणधर जिन पंच बालयतिवर, जिन आगम गुरु प्रभुवर बीसों।।
माँ जिनवाणी, निर्वाणभूमि, रत्नत्रय, दशलक्षण प्यारा।
नंदीश्वर पंचमेरू जिनवर, जिनचैत्य चैत्यालय मनहारा।।
जिनधर्म जिनागम बाहुबली, सोलहकारण पूजन करता।
इनका आह्वानन करके मैं, श्री मोक्ष महल का सुख वरता।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नरेन्द्र छन्द *(तर्ज : माइन–माइन...)*

धीर वीर गंभीर प्रभु की अर्चा मैं नित करता हूँ।
निर्मल जल की त्रय धारा दे जन्म–जरा–मृत हरता हूँ।।
देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल चंदन चरण चढ़ाता शीतलता मुझको देना।
भव का बन्धन हरने वाले भव की ज्वाला हर लेना।। देव शास्त्र..।।2।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल मनोहर अक्षत लाया अक्षयपद पाने हेतू।
अक्षयपद को देने वाली पूजन है सबका सेतू ।। देव शास्त्र..।।3।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जल भूमिज बहु पुष्प चढ़ाऊँ श्रद्धा से जिन गुण गाऊँ।
कामबाण को वश में करके मन ही मन मैं हर्षाऊँ ।।
देव-शास्त्र-गुरु बीस तीर्थंकर जिनवाणी गणधर पूजा।
त्रय चौबीसी रत्नत्रय नंदीश्वर दशलक्षण पूजा।।
सोलहकारण बाहुबली निर्वाणभूमि वा नवदेवा।
पंच परम परमेष्ठी पद की करते उत्तम सेवा।।4।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पुआ पकौडी रबड़ी घेवर आदिक व्यंजन मैं लाया।
क्षुधावेदनी के भेदन को प्रभु सन्मुख दौड़ा आया।। देव शास्त्र..।।5।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग दीपों की थाली ले आरती प्रभु की गाऊँगा।
मोहकर्म का नाश मेरा हो सम्यक्भाव बनाऊँगा।। देव शास्त्र..।।6।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप धूपायन में खेकर मैं अष्टकर्म का हनन करूँ।
प्रभु प्रतिमा के दर्शन करके निज स्वभाव का वरण करूँ।। देव शास्त्र..।।7।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे मीठे फल से अर्चा मनवांछित फल देती है।
प्रभु की अर्चा मेरे जीवन के संकट हर लेती है।। देव शास्त्र..।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो महामोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादिक आठों द्रव्यों का सुन्दर थाल सजाया है।
पद अनर्घ्य की अभिलाषा से भक्तिभाव जगाया है।। देव शास्त्र..।।9।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : वीतराग भगवान की, पूजा सब सुख खान।
त्रयधारा जल की करूँ, छोड़ूँ सब अभिमान।।

शांतये शांतिधारा।

दोहा– काम सृष्टि का नाश हो, पुष्पवृष्टि के साथ।
पुष्पांजलि क्षेपण करूँ, पूर्ण विनय के साथ।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जाप्य मंत्र : ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो नमः स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा : जयमाला की माल से, गूंजे जय–जयकार।
जयमाला हम पढ़ रहे, मिलकर सब नर–नार।।

शंभु छन्द *(तर्ज : ये देश है वीर...)*

श्री वीतराग सर्वज्ञ हितैषी अरिहंतों को नमन करूँ।
श्री सिद्ध सूरी पाठक साधु जिनचैत्य जिनालय नमन करूँ।।
सब द्वीपों के प्रभुवर न्यारे सीमंधर आदिक को ध्याऊँ।
श्री पंचमेरू अरू नंदीश्वर के चैत्यालय के गुण गाऊँ।।1।।

दशलक्षणधर्म हृदय धारूँ सोलहकारण भावन भाऊँ।
रत्नत्रय धारण करने के सम्यक् साधन को अपनाऊँ।।
चौदह सौ बावन गणधर जी सब ऋद्धि–सिद्धि देने वाले।
प्रभु के पाँचों कल्याणक भी सबका संकट हरने वाले।।2।।

जिनवर के सब जन्मस्थल को करता हूँ मैं शत–शत वंदन।
श्रावस्ती कौशाम्बी काशी अयोध्या चंद्रपुरी वंदन।।
काकंदी राजगृही मिथिला चंपापुर कुंडलपुर वंदन।
वैशाली सिंहपुरी कम्पिल हस्तिनापुर आदि वंदन।।3।।

अतिशय औ सिद्धक्षेत्र जी का सुमरण सब पाप तिमिर हरता।
मैं चंपा पावा ऊर्जयंत सम्मेदशिखर वंदन करता।।

पावा द्रोणा सोना तुंगी कैलाश चूलगिरी ध्याऊँगा।
रेसंदी मुक्ता उदयरत्न कुंथलगिरी को मैं जाऊँगा।।4।।

विपुलाचल पोदनपुर मथुरा तारंगा गजपंथा वंदन।
श्री सिद्धवरकूट कमलदहजी गुणावा शत्रुंजय वंदन।।
अहिक्षेत्र अणिंदा णमोकार जटवाडा पैठण चंवलेश्वर।
कचनेर चाँदखेड़ी पाटन जिन्तूर तिजारा गोमटेश्वर।।5।।

कुन्थुगिरी नवग्रह धर्मतीर्थ मांडल केशरिया को वंदन।
श्री महावीरजी पदमपुरा ऋषितीर्थ आदि को भी वंदन।।
जय ऊर्ध्व मध्य और अधोलोक के सब चैत्यालय मनहारी।
निर्वाण सिधारे पूज्य पुरुष की पूजा सब संकटहारी।।6।।

श्री राम हनु सुग्रीव नील महानील कुम्भ शम्बु ज्ञानी।
लवमदनांकुश सागर वरदत्त श्री बाहुबली स्वामी ध्यानी।
गौतम जम्बू सुधर्मा श्री त्रय पांडवसुत अनिरूद्ध नमन।
इस ढाईद्वीप से मोक्ष पधारे उन गुरुओं को है वंदन।।7।।

श्री पँचबालयति को ध्यायें नवदेवों की शरणा पायें।
सातिशय पुण्य कमाने को मंगलमय पूजा हम गायें।।
जिनगुण के अनुरागी बनकर संसार भ्रमण का नाश करें।
शिवपुर के राजतिलक हेतु यह 'राज' प्रभुगुण आश करे।।8।।

ॐ ह्रीं श्री समुच्चय जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा : श्री जिन के आशीष से, प्रगटाऊँ निज ज्ञान।
पूजन-कीर्तन-भजन से 'राज' वरे शिव थान।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

श्री चौबीस तीर्थंकर पूजा

रचनाकार–आचार्य गुप्तिनंदीजी

(गीता छन्द)

वृषभादि से वीरान्त तक है सर्व जिन की अर्चना।
हरती हमारे पाप तम और क्लेश की सब वंचना।।
त्रय रत्न गुणधर तीर्थकर की पुष्प लेकर थापना।
प्रभु का परम सान्निध्य पा हम दुःख मिटाये आपना।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अडिल्ल छन्द)

निर्मल जल हम कंचन झारी में भरें।
जिनवर के चरणों में त्रय धारा करें।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्दन सम शीतल चन्दन अर्पण करें।
जिनवर की अर्चा भव का वर्तन हरे।। जिन शासन...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवातापविनाशनाय चन्दनम् निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ता और अक्षत मुष्ठि में भर लिये।
अक्षय सुखदाता को अर्पण कर दिये।। जिन शासन...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

अम्बुज भूमिज मनहर सुरभित सुमन से।
मदनजयी को पूजे निज मन्मथ नशे।। जिन शासन...।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर प्रासुक व्यञ्जन से अर्चना।
परम कृपालु हरें क्षुधा की वंचना।।
जिन शासन का चक्र प्रवर्तन कर रहे।
चौबीसों जिनवर भव संकट हर रहे।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत कपूर दीपों से करते आरती।
जिनवर वाणी केवल दीप उजालती।। जिन शासन...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हितकर मनहर धूप चढ़ायें नाथ को।
कर्म विनाशन हेतु झुकायें माथ को।। जिन शासन...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपम् निर्वपामीति स्वाहा।

सरस मधुर केला आदि फल ला रहे।
मुक्ति फल दाता के चरण चढ़ा रहे।। जिन शासन...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल-फल आदि अर्घ बनाये भाव से।
अनर्घ पद हित भक्ति रचायें चाव से।। जिन शासन...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रभु को लख प्रमुदित हुआ, मन में हर्ष अपार।
तन मन को शांति मिले, करता शांतिधार।।

शांतये शांतिधारा...

प्रभु चरणों के पास में, अर्पित करते हार।
संयम के सौरभ खिले, पायें शिवपुर द्वार।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्....

जाप्य मन्त्र-ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

(9, 27 या 108 बार जाप करें)

जयमाला

दोहा – आदिनाथ से वीर तक चौबीसों भगवान।
उनकी जयमाला पढ़ें होवें सिद्ध समान।।

चौपाई

वृषभ धर्म वृषभेश बतायें, अजित कर्म अरि पर जय पायें।
संभव भव का भ्रमण छुड़ायें, अभिनंदन सुरवंद्य कहाये।।1।।

सुमति जिनेश सुमति के दाता, चित्त पद्म के पद्म विधाता।
श्री सुपार्श्व भव पाश हरेंगे, 'चन्द्र' चित्त में वास करेंगे।।2।।

पुष्पदंत को पुष्प चढ़ायें, शीतल अंतस्तल बस जायें।
श्री श्रेयांस श्रेय के दाता, वासुपूज्य वसु कर्म विघाता।।3।।

विमल कर्म मल दूर भगायें, जिन अनंत शक्ति प्रगटायें।
धर्मनाथ दशधर्म सिखायें, शांति जगत में शांती लायें।।4।।

कुंथु से कुंथ्वादिक रक्षा, अरहनाथ की श्रेष्ठ विवक्षा।
मल्लि कर्म मल्लों को जीते, मुनि सुव्रत व्रत अमृत पीते।।5।।

नमि को नमे सकल नर नारी, नेमि तजे राजुल सुकुमारी।
पारस के हम पार्श्व रहेंगे, वर्द्धमान को नमन करेंगे।।6।।

चौबीसों तीर्थेश हमारे, पंचकल्याणक जिनके न्यारे।
'गुप्तिनंदी' प्रभु के गुण गाये, तीन गुप्ति धर शिव सुख पाये।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरांत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

चौबीसों जिनदेव को, वंदन बारम्बार।
उनकी पूजा भक्ति से, मिले मोक्ष प्राकार।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

ऋद्धि मंत्र

स्वाहा बोलते हुये प्रत्येक मंत्र में यहाँ पुष्प चढ़ायें या धूप चढ़ायें। विधान करने से पूर्व ऋद्धि मंत्र अवश्य पढ़े।

णमो अरहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

1. णमो जिणाणं
2. णमो ओहि-जिणाणं
3. णमो परमोहि-जिणाणं
4. णमो सव्वोहि-जिणाणं
5. णमो अणंतोहि-जिणाणं
6. णमो कोट्ठ-बुद्धीणं
7. णमो बीज-बुद्धीणं
8. णमो पादाणु-सारीणं
9. णमो संभिण्ण-सोदारणं
10. णमो सयं-बुद्धाणं
11. णमो पत्तेय-बुद्धाणं
12. णमो बोहिय-बुद्धाणं
13. णमो उजु-मदीणं
14. णमो विउल-मदीणं
15. णमो दस पुव्वीणं
16. णमो चउदस-पुव्वीणं
17. णमो अट्ठंग-महा-णिमित्त-कुसलाणं
18. णमो विउव्वइड्ढि-पत्ताणं
19. णमो विज्जाहराणं
20. णमो चारणाणं
21. णमो पण्ण-समणाणं
22. णमो आगासगामीणं
23. णमो आसी-विसाणं
24. णमो दिट्ठिविसाणं
25. णमो उग्ग-तवाणं
26. णमो दित्त-तवाणं
27. णमो तत्त-तवाणं
28. णमो महा-तवाणं
29. णमो घोर-तवाणं
30. णमो घोर-गुणाणं
31. णमो घोर-परक्कमाणं
32. णमो घोर-गुण-बंभयारीणं
33. णमो आमोसहि-पत्ताणं
34. णमो खेल्लोसहि-पत्ताणं
35. णमो जल्लोसहि-पत्ताणं
36. णमो विप्पोसहि-पत्ताणं
37. णमो सव्वोसहि-पत्ताणं
38. णमो मण-बलीणं
39. णमो वचि-बलीणं
40. णमो काय-बलीणं
41. णमो खीर-सवीणं
42. णमो सप्पि-सवीणं
43. णमो महुर सवीणं
44. णमो अमिय-सवीणं
45. णमो अक्खीण महाणसाणं
46. णमो वड्ढमाणाणं
47. णमो सिद्धायदणाणं
48. णमो सव्व साहूणं

(णमो भयवदो-महदि-महावीर-वड्ढमाण-बुद्ध-रिसीणो चेदि।)

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री रविव्रत विधान

शंभु छंद

उपसर्ग विजेता पार्श्व प्रभु, मेरे मन मंदिर में आओ।
संकटहर चिंतामणि बाबा, सब चिंता दूर भगा जाओ।।
दस भव का वैरी दुष्ट कमठ, वो भी तुम शरणा में आये।
हम भी आह्वान करें जिनवर, पूजा से उत्तम सुख पायें।।

ॐ ह्रीं अर्हं दुःखदारिद्र्य निवारक, कामनापूर्ण फलदायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कलिकुंड संकटहर सर्व उपद्रव निवारक शांति तुष्टि-पुष्टि प्रदायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः-ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं अर्हं कल्याणकारक मंगलदायक धरणेन्द्र पद्मावती पूजित सहस्त्रफणी श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

शेर छंद

जिनदेव का भक्ति से भक्त न्हवन करायें।
निज जन्म जरा मृत्यु रोग नाशने आयें।।
हम पार्श्वनाथ की विशेष भक्ति रचायें।
रविव्रत विधान करके सर्व पाप नशायें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिकुण्ड पार्श्वनाथ को हम गंध लगायें।
प्रभु के चरण की गंध को हम शीश लगायें।। हम पार्श्वनाथ...।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नीलम मणि समान छवि आपकी प्यारी।
अक्षत अखण्ड ले चढ़ायें भक्त पुजारी।। हम पार्श्वनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नों के सिंहासन के मध्य नाथ शोभते।
हम उनको पुष्प रत्न चढ़ा पाप छोड़ते।।
हम पार्श्वनाथ की विशेष भक्ति रचायें।
रविव्रत विधान करके सर्व पाप नशायें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार की मिठाई शुद्ध बनायी।
अपनी क्षुधा मिटाने हमने चरण चढ़ायी।। हम पार्श्वनाथ...।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर ये जगमगा रहा अखण्ड ज्योति से।
हम दीप दान करके सजें ज्ञान ज्योति से।। हम पार्श्वनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ध्यान अग्नि में जलाये कर्म आपने।
हम भी चढ़ायें धूप अपने कर्म नाशने।। हम पार्श्वनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर मंदिरों में पार्श्वनाथ आप विराजे।
हम श्रेष्ठ मधुर फल चढ़ायें आपको ताजे।। हम पार्श्वनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हर भव में आपने क्षमा का सूत्र सिखाया।
हमने अनर्घपद के हेतु अर्घ चढ़ाया।। हम पार्श्वनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अडिल्ल छंद)

पार्श्वनाथ की प्रतिमा मन पावन करे।
संकटहर चिंतामणि सब संकट हरे।।

प्रभु पद में हम त्रय धारा जल की करें।
कर कमलों से पुष्पाञ्जलि अर्पण करें।।

शांतये शांतिधारा/दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा। (2) ॐ ह्रीं नमो भगवते चिंतामणि पार्श्वनाथ सप्तफण मंडिताय श्री धरणेन्द्र-पद्मावती सहिताय मम ऋद्धिं सिद्धिं वृद्धिं सौख्यं कुरु-कुरु स्वाहा। (9, 27 या 108 बार जाप करें)

प्रथम वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

क्षायिक ज्ञान लब्धि के धारी, पार्श्वनाथ को ध्यायें।
अपना मिथ्याज्ञान नशाने, घृत का दीप चढ़ायें।।
नव लब्धि धारी परमेश्वर, दानी श्रेष्ठ कहाते।
भक्ति से इनको हम पूजें, चरणन् अर्घ चढ़ाते।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दर्शन लब्धि धारी, श्री जिनदेव कहाये।
जिनवर की गुण महिमा गा हम, मोह तिमिर विनशायें।। नव..।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक सम्यक लब्धिधारी, समकित मार्ग दिखायें।
भव-भव का मिथ्यात्व हरो जिन, हम चरणों में आये।। नव..।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक चारित लब्धि धारी, चौथे बाल यतीश्वर।
उत्तम चारित पाने भगवन्, पूजें भव्य मुनीश्वर।।
नव लब्धि धारी परमेश्वर, दानी श्रेष्ठ कहाते।
भक्ति से इनको हम पूजें, चरणन् अर्घ चढ़ाते।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक दान लब्धि से भूषित, सर्व दान जिन देते।
प्रभुवर के दर आकर हम नित, बिन मांगे सुख लेते।। नव..।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक लाभ लब्धि के धारी, अक्षय लाभ जगायें।
अक्षय लाभ गुणों का पाने, हम प्रभु शरणा आये।। नव..।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक भोग लब्धि जिन पाते, सुख अनंत जिन भोगें।
हम हैं प्रभुवर लाल तुम्हारे, हमको शरणा दोगे।। नव..।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक है उपभोग लब्धि ये, कर्मनाश प्रभु पायें।
अक्षय लब्धि हैं जिनवर में, उनसे हम भी पायें।। नव..।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षायिक वीर्य लब्धि को जिनवर, कर्म नाश कर पायें।
वीर्य शक्ति के आगे निश्चित, कर्म शक्तियाँ जायें।। नव..।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतप्रथमवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रविव्रत करें विधान हम, मंडल भव्य सजाय।
लगा चंदेवा छत्र संग, बंदनवार लगाय।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

प्रथम वर्ष के नौ रविव्रत में, अनशन व्रत स्वीकार करें।
करते जो उपवास भक्ति से, निज आतम में वास करें।।

जल फल आदिक आठ द्रव्य संग, पूरण अर्घ चढ़ाते हैं।
पार्श्वनाथ करुणा निधान को, हम सब शीश झुकाते हैं।।

ॐ ह्रीं प्रथमवर्षे रविव्रतोपवासप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करुणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

द्वितीय वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- **रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।**
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(दोहा)

द्वितीय वर्ष आषाढ़ का, शुक्ल पक्ष मनहार।
काँजी का आहार लो, उत्तम सुख दातार।।
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्ष दूसरे में करो, काँजी का आहार।
स्वर्गों का वैभव मिले, व्रत पालो सुखकार।।
पार्श्वनाथ भगवान का, ये रविव्रत सुखकार।
अष्ट द्रव्य ले पूजते, आ हम प्रभु के द्वार।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रविव्रत तीजा पार्श्व का, व्रत की सिद्धी कराय।
मांड ग्रहण कर व्रत करें, उत्तम वैभव पाय।। पार्श्वनाथ...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे रविव्रत से मिले, प्राणी को संतोष।
काँजी का आहार ले, व्रत पालें निर्दोष।। पार्श्वनाथ...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संकटमोचन व्रत यही, दे सुख शांति अपार।
ले आचाम्ल विशेष जो, पाये सौख्य अपार।। पार्श्वनाथ...।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्नहरण मंगलकरण, भुक्ति मुक्ति दातार।
कांजि ही बस ग्रहण करो, ये छठवा रविवार।। पार्श्वनाथ...।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रसना इन्द्रिय जय करो, लो काँजी आहार।
पार्श्वनाथ का ध्यान कर, पाओ पुण्य अपार।। पार्श्वनाथ...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्ति करें हम पार्श्व की, पाने सम्यक् दर्श।
व्रत में काँजी भोज लें, नाशें मिथ्या दर्श।। पार्श्वनाथ...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत जो व्रत पालते, अन्नादिक दे त्याग।
काँजी दूजे वर्ष लें, छोड़ें सबसे राग।। पार्श्वनाथ...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

द्वितीय वर्ष के इस रविव्रत में, काँजी का आहार करें।
रसना इन्द्रिय को वश करके, षट्रस व्यंजन त्याग करें।।
पार्श्वनाथ के इस रविव्रत को, जो श्रद्धा से अपनाये।
दुःख दारिद्र्य मिटा वो अपना, जिन सम शिव लक्ष्मी पाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतद्वितीयवर्षे कांजिकाहार प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

तृतीय वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- **रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।**
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शंभु छंद)

ये वर्ष तीसरा रविव्रत का, हम नमक त्याग भोजन करते।
जो त्याग सहित व्रत को धारे, वो सर्वोत्तम यश सुख वरते।।
रविव्रत पारस प्रभु की पूजा, दुःख-संकट हरने वाली है।
आनंद सौख्य यशकीर्ति वा, धन-शांति देने वाली है।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिषेक सहित पूजा करते, और जाप करे जो इस व्रत का।
आहार करें जो नमक बिना, फल पाते दुगुना इस व्रत का।। रविव्रत...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ का पाठ करे, रात्रि में ना विश्राम करें।
सेंधव तज जो आहार करे, वो स्वर्ग मोक्ष अविराम वरें।। रविव्रत...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में शुभ भाव जगाने को, अपने कर्तव्यों को पालें।
भवि लवण बिना भोजन करके, जीवन के विघ्नों को टालें।। रविव्रत...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो व्रत लेकर अर्चा करते, उनको व्रत का फल शीघ्र मिले।
भोजन में लवणादिक छोड़ें, प्रभुवर की उसको शरण मिले।। रविव्रत...।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नर नारी रविव्रत पालें, और राग-रंग का त्याग करे।
वो पंचेन्द्रिय पर जय पायें, जिन चरणों से अनुराग करे।। रविव्रत...।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत पालन से सिद्धी होती, जैनागम से हमने जाना।
मन वच काया त्रय शुद्धि से, हमको इस व्रत को अपनाना।। रविव्रत...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब धर्म ध्यान में चित्त लगे, सांसारिक वैभव ना भाये।
प्रभु की मुख मुद्रा हृदय बसे, हम यही भावना नित भायें।।
रविव्रत पारस प्रभु की पूजा, दुःख-संकट हरने वाली है।
आनंद सौख्य यशकीर्ति वा, धन-शांति देने वाली है।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौभाग्यवान वे प्राणी हैं, जो प्रभु का कीर्त्तन करते हैं।
रविव्रत के दिन संयम धरकर, प्रभु चरणों में रत रहते हैं।। रविव्रत... ।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष तीसरा इस रविव्रत का, नो रविवार नमक छोड़ें।
इस व्रत को श्रद्धा से करके, कर्मों के बंधन तोड़े।।
पार्श्वनाथ के शुभ चिंतन में, अपना समय लगाते हैं।
अष्ट द्रव्य में श्रीफल ले हम, ध्वज युत अर्घ चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं रविव्रततृतीयवर्षे लवणरहितैकभुक्तिःप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चतुर्थ वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नरेन्द्र छंद)

बाल यतिश्वर तेइसवें जिन, नगर बनारस के राजा।
पूज रहे हम तुमको निशदिन, हे मधुवन के जिनराजा।।
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरो।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्वसेन वामानंदन की, नीलमणी सम थी काया।
सौ वर्षों की आयु पाई, उत्तम तन उनने पाया।। चौथा वर्ष...।।2।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक दिवस मित्रों को संग ले, पारस प्रभु वन में जायें।
जीव जल रहे इस लक्कड़ में, तापस को प्रभु समझायें।। चौथा वर्ष...।।3।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नागयुगल को मंत्र सुनाया, मरकर वो सुरतन पायें।
शासन यक्ष बने वे दोनों, प्रभु सेवा कर हर्षाये।। चौथा वर्ष...।।4।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व भवों के विशद ज्ञान से, हुये जिनेश्वर वैरागी।
चौथे बाल यतिश्वर के हम, चरण कमल के अनुरागी।। चौथा वर्ष...।।5।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा लेकर करी साधना, भीमावन में प्रभु आये।
कमठ करे उपसर्ग प्रभो पे, कष्टों पे प्रभु जय पायें।। चौथा वर्ष...।।6।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मावती माता ने आकर, प्रभु को सिर पर धार लिया।
श्री धरणेन्द्र यक्ष ने आकर, प्रभु के सर फण तान दिया।।
चौथा वर्ष लगे रविव्रत का, मन में अति उत्साह भरो।
करो अल्प आहार विधि से, रविव्रत कर शिव सौख्य वरो।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सावलियाँ प्रभु पार्श्वनाथ की, सहस फणों की प्रतिमायें।
फणा शीश पे चिह्न सर्प युत, सर्वाधिक प्रभु प्रतिमायें।। चौथा वर्ष...।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म बनारस मोक्ष शिखर जी, तीर्थ नाथ के मन भाये।
अतिशयकारी तीर्थ अनेकों, पार्श्वनाथ के कहलाये।। चौथा वर्ष...।।9।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

पारस पारस हे प्रभु ! पारस, तीन लोक तुमको ध्यायें।
पारस प्रभुवर के चरणों में, हम पूर्णार्घ सजा लाये।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ के, नाम मंत्र का जाप करें।
चिंतामणि संकटहर प्रभु का, पूजन ध्यान विधान करें।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतचतुर्थवर्षे चाटुकैकभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पंचम वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय-जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(सखी छंद)

रविव्रत आषाढ़ से आता, मंदिर में उत्सव छाता।
जिसका पुण्योदय आता, वो रविव्रत में लग जाता।।
जब वर्ष पाँचवा आये, रविव्रत को भवि अपनायें।
हम पार्श्वनाथ को ध्यायें, द्रव्यों की थाल चढ़ायें।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छह रस का त्याग करीजै, रविव्रत को चित्त धर लीजे।
जल छाछ ही इसमें लीजे, इस व्रत को पूरण कीजे।। जब...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारसमणि तो इक पत्थर, पारस प्रभु हैं तीर्थंकर।
पारसमणि स्वर्ण बनाये, प्रभु हमको प्रभु बनायें।। जब...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैरी पे द्वेष नहीं है, भक्तों से राग नहीं है।
प्रभुवर हैं समताधारी, छवि वीतराग मनहारी।। जब...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समता प्रभुवर से सीखें, शत्रु पे कभी ना चीखें।
मैत्री प्रमोद अपनायें, गुणियों से राग बढ़ायें।।
जब वर्ष पाँचवा आये, रविव्रत को भवि अपनाये।
हम पार्श्वनाथ को ध्यायें, द्रव्यों की थाल चढ़ायें।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसक जीवों को तारा, दुर्गति से उन्हें उबारा।
उनको नवकार सुनाया, सुरपद दोनों ने पाया।। जब...।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पारस का रस है चोखा, इसमें किञ्चित ना धोखा।
पारस का रस हम पायें, जीवन को सफल बनायें।। जब...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमुदित मन से व्रत धारें, कहते हमको गुरु सारे।
क्रोधादिक् रञ्च न लावें, समता परिणाम जगावें।। जब...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधिवत हम रविव्रत पाले, प्रभु चरणन् चित्त लगालें।
इस वर्ष छाछ ही लेवे, षट्रस व्यंजन तज देवे।। जब...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष पाँचवाँ इस रविव्रत का, नो रविवार इसे पाले।
नमक बिना बस छाछ भात लें, होवें उत्तम पद वाले।।
पार्श्वनाथ की पूजा करने, जल चंदन आदिक लाये।
हर्ष सहित पूर्णार्घ चढ़ाकर, मन अति पावन हो जाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतपंचमेवर्षे निवेडभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

षष्ठम् वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- **रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।**
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आँचली बद्ध (आठ दरब मय अर्घ बनाय... पंचमेरु पूजा की राग)

ऋद्धि सिद्धि दाता भगवान, चिंतामणि है इनका नाम।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विघ्न विनाशक मंगलदाय, पार्श्व प्रभु सब विघ्न नशाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।2।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसको भूत पिशाच सताय, उसकी बाधा प्रभु विनशाय।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....
छट्ठे वर्ष करें रविवार, एक अन्न इसमें आहार।
कहें मुनिराय, पार्श्व प्रभु की भक्ति रचाय....।।3।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रोग व्याधियाँ धर्म छुड़ाय, प्रभु का नाम निरोग बनाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।4।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बिना धरम के धन ना आय, प्रभु पूजा ही भाग्य जगाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।5।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आज्ञाकारी हो सुत नार, जहाँ धरम के हो संस्कार।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।6।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम पात्र महामुनिराय, उनको नित आहार कराय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।7।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दान धर्म में द्रव्य लगाय, दुःख दारिद्र्य सभी मिट जाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत संयम तप जो अपनाय, वो भी इक दिन शिवपुर पाय।
कहें मुनिराय.... छट्ठे वर्ष....।।9।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

षष्ठ वर्ष के इस रविव्रत में, एक अन्न ही ग्रहण करें।
त्याग नियम संयम समता धर, अपना आत्मोत्थान करें।।
नीरादिक द्रव्यों को ले हम, पूरण अर्घ चढ़ाते हैं।
रविव्रत के स्वामी पारस को, झुक-झुक शीश नवाते हैं।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतषष्ठमेवर्षे एकान्नभुक्ति प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

सप्तम वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- **रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।**
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(नवगीता छंद)

रविव्रत लगे जब सातवाँ, गोरस तजें शुचि व्रत करें।
रस गृद्धता को त्याग कर, इक बार भोजन हम करें।।
पायें शरण प्रभु आपकी, ऐसा हमें वरदान दो।
हम कर रहे नित अर्चना, हमको प्रभो सद्ज्ञान दो।।1।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धारें निशंकित अंग को, शंका कभी भी ना करें।
जिन आप्त गुरु जिन ग्रंथ पे, श्रद्धान सच्चा हम करें।। पायें....।।2।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कांक्षा रहित पूजा करें, भगवान पारसनाथ की।
ये अंग निकांक्षित कहें, माला जपो प्रभु नाम की।। पायें....।।3।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में घृणा ना अल्प हो, धर्मात्मा को देखकर।
गुण के पुजारी हम बनें, जिन चरण मस्तक टेककर।। पायें....।।4।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्या तत्व क्या कुतत्व ये, अमूढ़ दृष्टि जानते।
त्रय मूढ़ता को त्याग कर, जिनराज को ही मानते।। पायें....।।5।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का करें गुणगान हम, मम दोष प्रतिपल दूर हो।
दृष्टि सदा गुण पे रहे, अवगुण मेरे चकचूर हो।। पायें....।।6।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्त्व से ना हम गिरे, और ना गिरे धर्मात्मा।
नित धर्म में अविचल रहे, बस ये प्रभु से प्रार्थना।। पायें....।।7।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वात्सल्य सबसे जो रखे, तीर्थेश वो प्राणी बने।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम मोक्ष पथगामी बनें।। पायें....।।8।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म नित जयवंत हो, ये ही हमारी भावना।
तीर्थेश पारसनाथ की, इस हेतु है आराधना।।
पायें शरण प्रभु आपकी, ऐसा हमें वरदान दो।
हम कर रहे नित अर्चना, हमको प्रभो सद्ज्ञान दो।।9।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

रसना इन्द्रिय की लोलुपता, जो भविजन मन से त्यागे।
उसके त्यागमयी भावों से, कर्म बंध जल्दी भागें।।
पार्श्वनाथ भगवन् को भज हम, अपना भाग्य जगायेंगे।
रविव्रत करके उत्तम विधि से, मोक्ष संपदा पायेंगे।।

ॐ ह्रीं सूर्यव्रतसप्तमेवर्षे निगोरसभुक्तिप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अष्टम वलय – रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा– रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(चौपाई)

वर्ष आठवाँ रविव्रत आया, षट्रस भोजन त्याग बताया।
मुनियों ने यह व्रत बतलाया, भक्ति सहित करना सिखलाया।।
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करें करावें, व्रत कर मोक्ष महासुख पावें।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत उद्यापन जब करवावें, मंदिर में भी रंग करावें।
झूमर तोरण द्वार लगावें, ये भी इक पूजा कहलावें।। पार्श्व....।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में घंटा लगवावें, दिव्यध्वनि सा अतिशय पावें।
रंगोली से चौक सजायें, लक्ष्मी माँ उसके घर आये।। पार्श्व....।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महापुरुष की कथा करायें, जीवन में वैराग्य समाये।
व्रत संयम का भाव जगायें, समता भाव उमड़ कर आवें।। पार्श्व....।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हर दिवार पे चित्र बनायें, मन में प्रभु के चित्र बसायें।
अंत समय जब अपना आवे, जिन चरित्र का ध्यान लगावें।। पार्श्व....।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप अखंड विशेष लगायें, महा आरती करें करायें।
केवलज्ञान की ज्योति पाये, जो प्रभु के दर दीप जलाये।। पार्श्व....।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु की वेदी श्रेष्ठ बनायें, स्वर्ण रत्न उसमें जड़वायें।
दान करें ऐसा जो कोई, स्वर्ग लोक में जन्मे वो ही।।
पार्श्व प्रभु की भक्ति रचायें, ध्वजा सहित हम अर्घ चढ़ायें।
रविव्रत जो भी करें करावें, व्रत कर मोक्ष महासुख पावें।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्रत में दूध दही घृत त्यागें, गोरस आदि सब कुछ त्यागें।
ये अष्टम रवि व्रत कहलावे, अष्ट करम से हमें छुड़ावे।। पार्श्व....।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में जो शिखर बनाये, स्वर्ण कलश और ध्वजा चढ़ाये।
वो नित मान प्रतिष्ठा पावे, आगे स्वर्ग मोक्ष सुख पावे।। पार्श्व....।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ (नरेन्द्र छंद)

वर्ष आठवें के रविव्रत में, जो नीरस भोजन करते।
पूजा दान करे विधि पूर्वक, सर्वश्रेष्ठ पद वो वरते।।
जल चंदन अक्षत पूष्पादिक् , द्रव्य चढ़ाने हम आये।
पूरण अर्घ चढ़ा हम भगवन्, कर्म श्रृंखला विनशायें।।

ॐ ह्रीं रविव्रतअष्टमेवर्षे रूक्षाहार प्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं।।
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहे।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहे।।

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

नवम वलय - रविवार व्रत के नौ अर्घ

दोहा- रविव्रत पार्श्व विधान को, करें भक्ति के साथ।
नमन करें प्रभु पार्श्व को, जय-जय पारसनाथ।।

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(रोला छंद)

चार घातियाँ नाश, श्री अरिहंत कहायें।
उनको हम सब आज, उत्तम अर्घ चढ़ायें।।
रविव्रत नौवे वर्ष, प्रौषध व्रत अपनाये।
पार्श्व प्रभु को ध्याय, सर्व सुखों को पायें।।1।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल विमल चिद्रूप, सिद्ध बुद्ध अविनाशी।
अष्ट कर्म से मुक्त, सिद्ध शिला के वासी।। रविव्रत...।।2।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालें पंचाचार, श्री आचार्य हमारे।
आत्म सिद्धि के हेत, इनके चरण पखारें।। रविव्रत...।।3।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाठन पठन कराय, उपाध्याय मन भाये।
बुधग्रह दोष नशाय, जो नित गुरु को ध्यायें।। रविव्रत...।।4।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नग्न दिगम्बर रूप, पंच महाव्रत धारी।
क्रूर ग्रहों की चाल, इनके आगे हारी।।
रविव्रत नौवे वर्ष, प्रौषध व्रत अपनाये।
पार्श्व प्रभु को ध्याय, सर्व सुखों को पायें।।5।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म तीर्थ दिनरात, जग में बढ़ता जाये।
दया अहिंसा रूप, जैन धर्म कहलाये।। रविव्रत...।।6।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनुयोग है चार, वो है माँ जिनवाणी।
जिनके नाम अनेक, कहते गणधर ज्ञानी।। रविव्रत...।।7।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन प्रतिमा अभिराम, लगती सबको प्यारी।
उनकी भक्ति त्रिकाल, मेटे संकट भारी।। रविव्रत...।।8।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चैत्यालय भव्य, घंटा कलश ध्वजामय।
जिसको पूजें भव्य, पायें मोक्ष सुखालय।। रविव्रत...।।9।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ *(नरेन्द्र छंद)*

प्रथम परोसा भोजन करते, नवम वर्ष के रविव्रत में।
एक बार ही भोजन करना, कहते मुनिवर रविव्रत में।।
पूजन पाठ करें रविव्रत में, तप संयम हम अपनायें।
अर्पण करने अर्घ प्रभु को, श्रीफल की माला लाये।।

ॐ ह्रीं रविव्रतनवमेवर्षे एकस्थानप्रोषधोद्योतनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

पारस प्रभु के नाम का, रविव्रत विधान महान् है।
संकट हरें पीड़ा हरें, श्री पार्श्व करूणावान हैं॥
ऐसे प्रभु के पाद में, हम शांतिधारा कर रहें।
चिंतामणि के पाद में, बहु बार वन्दन कर रहें॥

शांतये शांतिधारा

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी॥
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी॥

दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र : (1) ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथाय नमः स्वाहा।
(2) ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय धरणेन्द्र पद्मावति सहिताय दुष्टग्रह शोक सर्वज्वर रोगाल्पमृत्युविनाशनाय सूर्यव्रतोद्योतनाय नमः स्वाहा।
(जयमाला के पहले ये मंत्र जाप करना चाहिये।) (9, 27 या 108 बार जाप करें)

समुच्चय जयमाला

दोहा : **पार्श्वनाथ भगवान की, जयमाला सुखकार।**
रविव्रत नायक पार्श्व को, वंदन बारम्बार॥

(नरेन्द्र छंद)

जय-जय पार्श्व जिनेश्वर सबके, चिंतामणि संकटहारी।
यंत्रराज कलिकुण्ड नाथ की, मूरत लगती मनहारी॥
बालयतिश्वर तैइसवें जिन, वामा माँ नंदन प्यारे।
अश्वसेन के राजकुँवर को, पूजें सुर-नर मिल सारे॥1॥

आप नाम के पर्व अनेकों, भक्त भक्ति से अपनायें।
उनमें भी रविव्रत करने से, सब दुःख संकट कट जाये॥
मतिसागर की सेठानी ने, मुनिवर से रविव्रत धारा।
घर जाकर बेटे बहुओं को, बतलाया व्रत दुःखहारा॥2॥

करें पुत्र परिजन जब निंदा, सेठानी ने व्रत तोड़ा।
पाप उदय से उसी समय में, लक्ष्मी ने उनको छोड़ा॥
दर-दर के वो बने भिखारी, दासवृत्ति को अपनायें।
पुत्र बनारस नगर छोड़कर, नगर अयोध्या में जायें॥3॥

सेठ-सेठानी रुके बनारस, उनके फिर शुभ दिन आये।
वो अवधिज्ञानी गुरुवर को, अपनी पीड़ा बतलाये॥
मुनि बोले रविव्रत निंदा से, तुम पर ये संकट आया।
उनने निज आलोचन करके, फिर से रविव्रत अपनाया॥4॥

रविव्रत की महिमा से उनके, तत्क्षण अच्छे दिन आये।
किन्तु सातों पुत्र अवध में, व्रत निन्दा का फल पायें॥
अवध देश के एक ग्राम में, सातों खेती करते थे।
सर्दी-गर्मी भूख प्यास वा, सब कष्टों को सहते थे॥5॥

इक दिन छोटे भाई गुणधर, हसिया भूले खेती में।
भाभी बोली जाओ पहले, हसिया लाओ खेती से॥
हसिये पर अहि[1] लिपटा देखा, गुणधर तब अति घबराया।
श्रद्धापूर्वक उसने मन में, पार्श्वनाथ प्रभु को ध्याया॥6॥

पद्मावती माता ने उसको, स्वर्णिम हसिया भेंट किया।
रत्नमयी जिनबिम्ब पार्श्व भी, बहु द्रव्यों संग भेंट दिया॥

1. सांप।

गुणधर के श्रद्धा की महिमा, अवध नरेश्वर तक आयी।
उनने राज्य सहित कन्या दे, व्रत की महिमा फैलायी।।7।।
मात-पिता संग राज्य संपदा, वैभव उन सबने पाया।
फिर विरक्त हो मुनि दीक्षा धर, स्वर्ग संपदा सुख पाया।।
गुणधर तीजे भव में निश्चय, श्रेष्ठ सिद्ध पद पाते हैं।
रविव्रत की 'आस्था' वा महिमा, उत्तम शास्त्र बताते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं धरणेन्द्रपद्मावतीसहितायदुष्टग्रहशोकसर्वज्वर-रोगाल्पमृत्युविनाशनाय श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

रविव्रत पूजा संकट हरती, भव्यों को मंगलकारी।
विधिवत जो यह रविव्रत धारे, वो पाये सुख यश भारी।।
'आस्था' से जो पारस प्रभु की, पूजा करते नर-नारी।
त्रय गुप्ति धर मुक्तिराज के, बन जाते वो अधिकारी।।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

(दोहा)

पार्श्वनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
आदि शांति महावीर को, वंदन बारम्बार॥1॥

गणधरश्रुत गुरु पाँच जो, परमेष्ठी त्रयकाल।
कुंथु कनक गुरुराज को, सदा नमाऊँ भाल॥2॥

गुप्तिनंदी गुरुराज को, सदा झुकाऊँ शीश।
सम्पादन उनने किया, देकर शुभ आशीष॥3॥

पौष शुक्ल की पूर्णिमा, रविपुष्यामृत योग।
ये विधान रविव्रत लिखा, पाने को शुभ योग॥4॥

ज्येष्ठ शुक्ल की सप्तमी, पूरण किया विधान।
रविवार रविव्रत करें, पानें मुक्ति महान्॥5॥

काव्य कला जानूँ नहीं, ना छंदों का ज्ञान।
भक्ति के वश में लिखा, प्रभु पे कर श्रद्धान॥6॥

जब तक सूरज चाँद है, तब तक रहे विधान।
पार्श्व प्रभु के नाम का, होता रहे विधान॥7॥

पार्श्व प्रभु के चरण में, 'आस्था' करें प्रणाम।
हाथ-जोड़ विनती करें, पाये मुक्ति धाम॥8॥

॥ इति अलम् ॥

रविव्रत विधान की आरती

(तर्ज – सगला चालो रे....)

आओ आओ रे प्रभु के द्वारे चले आओ, चले आओ....
झूम-झूम के पार्श्व प्रभु की आरती गाओ।।
आओ-आओ...

ये विधान रविव्रत सुखकारी, सबके संकट हरता।
दुःख-दारिद्र्य नशाने भगवन्, मैं भी रविव्रत करता।।
आओ-आओ...

वामा माँ के राजदुलारे, अश्वसेन के प्यारे।
नगर बनारस में प्रभु जन्मे, सबके तारणहारे।।
आओ-आओ...

सारंगी वीणा आदिक ले, सात सुरों में गाओ।
पारस बाबा के मंदिर में, दीपावली मनाओ।।
आओ-आओ...

छम-छम बजते पायल घुंघरु, वाद्य सुमंगल बाजे।
हर भक्तों के मन में देखो, पारसनाथ विराजे।। आओ-
आओ...

केवलज्ञानी पारस स्वामी, केवल इतना वर दो।
'आस्था' से हम करें आरती, केवल ज्योति वर दो।।
आओ-आओ...

***

चिंतामणि पार्श्वनाथ की आरती

(तर्ज – मिलो ना तुम तो हम....)

हे धरणेश्वर, हे परमेश्वर, झुक–झुक शीश झुकायें।
करें हम आरती....

हे तीर्थेश्वर, हे परमेश्वर, चरणों में हम आये।।
करें हम आरती....

1. पद्मावती माँ ने, शीश बिठाया प्रभु आपको।
धरणेन्द्र यक्ष ने, छत्र लगाया प्रभु आपको।।
समता धारी पार्श्व जिनेशा, गुण तेरे नित गाये।
करें हम आरती..

2. सात फणों से लेकर, सहस्र फणा है प्रभु आपपे।
पार्श्वनाथ प्रतिमा के, फण ही सरल पहचान है।।
पद्मावती धरणेन्द्र आपके, भक्त विशेष कहाये।
करें हम आरती..

3. हर एक मंदिर में, प्रतिमायें होती पार्श्वनाथ की।
हर एक प्राणी के, मन में बसे हैं पार्श्वनाथ जी।।
जग–मग जग–मग ज्योति जलाये, 'आस्था' भी हर्षाये।
करें हम आरती..

***

अर्घावली

श्री जिनवाणी माता

(चामर छंद)

नीर गंध वस्त्र आदि अर्घ भाव से लिया।
आपका विधान मात भक्ति भाव से किया।।
दिव्य देशना महान है जिनेश आपकी।
मात अर्चना हरे प्रवंचना विभाव की।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीवाग्वादिनीभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री गणाधिपति गणधर भगवान का अर्घ

(नरेन्द्र छंद)

कर्म अष्ट से लड़ने हेतु वेष दिगम्बर धार लिया।
क्षायिक पद की अभिलाषा से कर्म अरि पर वार किया।।
जल फल आदि आठ द्रव्य से करता प्रभु का अभिनंदन।
मुनिगण के स्वामी हैं गणधर उनका मैं करता अर्चन।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वगणधर परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग. गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी

(शेर छंद)

आचार्य कुंथु सिंधु हैं वात्सल्य दिवाकर।
हम धन्य-धन्य आज उनको अर्घ चढ़ाकर।।
जिनधर्म का डंका बजाना जिनका है धरम।
भक्ति से भक्त बोलो वंदे कुंथुसागरम्।।

ॐ ह्रीं गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी

(जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे सबको धर्म सिखाये।।
साम्य भाव ही सुख स्वभाव है यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजाकर गुरु को अर्घ चढ़ाये।।

ॐ ह्रीं वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव का अर्घ

(1) (शेर छंद)

आचार्य गुप्तिनंदी ने, कमाल कर दिया।
वात्सल्य से सभी को, मालामाल कर दिया।।
गुरुदेव मुस्कुराके, आशीर्वाद दीजिये।
पूजा हमारी आप ये, स्वीकार कीजिये।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(2) (तर्ज - माईन-माईन....)

प्रज्ञायोगी गुप्तिनंदी, महाकवि गुणधारी।
आर्ष मार्ग की राह बतायें, जय हो गुरु तुम्हारी।।
बोलो गुप्तिनंदी की जय, बोलो कविहृदय की जय।
बोलो महाकवि की जय, बोलो धर्म सूर्य की जय।।
नीर गंध अक्षत पुष्पादि, अष्ट द्रव्य हम लाये।
कुंथु कनकनंदी के नंदन, तुमको अर्घ चढ़ायें।।
धर्म तीर्थ के प्रेरक गुरुवर-2, जन-जन के उपकारी।
हम सब तुमको शीश झुकायें, जय हो गुरु तुम्हारी।
बोलो गुप्तिनंदी की जय.....

ॐ ह्रीं परम पूज्य प्रज्ञायोगी, आर्षमार्ग संरक्षक, कविहृदय, धर्मक्रांति सूर्य, ज्ञान दिवाकर, व्याख्यान वाचस्पति, श्रावक संस्कार उन्नायक, महाकवि आचार्य श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(शेर छंद)

मैं पूजता अरिहंत सिद्ध सूरि को सदा।
उवज्झाय सर्व साधु और शारदा मुदा।।
गणधर गुरु चरण की नित्य अर्चना करूँ।
दश धर्म सोलह भावना की अर्चना करूँ।।1।।

अरहंत भाषितार्थ दया धर्म को भजूँ।
श्री तीन रत्न रूप मोक्ष धर्म को जजूँ।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य को ध्याऊँ।
चैत्यालयों का ध्यान लगा अर्घ चढ़ाऊँ।।2।।

सब सिद्ध क्षेत्र तीर्थ क्षेत्र को भजूँ सदा।
औ तीन लोक के समस्त तीर्थ सर्वदा।।
चौबीस जिनवरों व बीस नाथ को ध्याऊँ।
जल आदि अष्ट द्रव्य ले पूर्णार्घ चढ़ाऊँ।।3।।

दोहा : जल आदिक वसु द्रव्य की, लेकर आये थाल।
महाअर्घ अर्पण करें, प्रभु को नमें त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं द्रव्य सहित भावपूजा भाववंदना त्रिकाल पूजा त्रिकाल वंदना करे करावै भावना भावै श्री अरहंतसिद्ध आचार्य उपाध्यायसर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। विदेह क्षेत्रस्थ विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। जल, थल, आकाश, गुफा, पहाड़, सरोवर, नगर-नगरी, ऊर्ध्वलोक, मध्यलोक, अधोलोक स्थित कृत्रिम-अकृत्रिम जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः। पाँच भरत पाँच ऐरावत संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनराजेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरू संबंधी

अस्सी जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाशगिरी, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, मथुरा, गजपंथा, मांगीतुंगी, तपोभूमि आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, देवगढ़, चंदेरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, कुंथुगिरी, पुष्पगिरी, अंजनगिरी, धर्मतीर्थ, वरूर,राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीरजी, पदमपुरा, तिजारा, अहिच्क्षेत्र, कचनेर, जटवाड़ा, पैठण, गोम्मटेश्वर, चंवलेश्वर, बिजौलिया, चांदखेड़ी, पाटन, कुण्डलपुर, अणिन्दा वृषभदेव णमोकार ऋषि तीर्थ आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः। भूत–भविष्यत–वर्तमान काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपावंतं श्री वृषभादि महावीरपर्यंतं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे..... प्रान्ते–नगरे..... मासानांमासे.....मासे.....पक्षे.....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकाणां श्रावक श्राविकाणां, क्षुल्लक, क्षुल्लिकानां, सकल कर्मक्षयार्थं (जलधारा) जलादि महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(27 श्वासोच्छवास में 9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें।)

शांतिपाठ (हिन्दी)

चौपाई

(शांतिपाठ बोलते समय पुष्पाञ्जलि क्षेपण करते रहें)

शशि सम निर्मल जिन मुखधारी, शील सहस्र गुणों के धारी।
लक्षण वसु शत त्रयपदधारी, कमल नयन शांति सुखकारी॥1॥

(नोट–यहाँ शांतिधारा करें।)

शांतिनाथ पंचम चक्रीश्वर, पूजें तुमको इन्द्र मुनीश्वर।
शांति करो हे शांति ! जिनेश्वर, जगत् शांतिहित नमते गणधर॥2॥

आठों प्रातिहार्य मनहारी, ये जिन वैभव हैं सुखकारी।
तरु अशोक पुष्पों की वर्षा, दिव्य ध्वनि सिंहासन रवि सा॥3॥

छत्र चँवर भामंडल चम–चम, देव–दुंदुभि बजती दुम–दुम।
शांति करो त्रय जग में स्वामी, शीश झुकाता तुमको स्वामी॥4॥

आप अनंत चतुष्टय धारी, मंगल द्रव्य आठ अघहारी।
सर्व विघ्न प्रभु आप नशाओं, हे शांति प्रभु ! शांति दिलाओ॥5॥
पूजक राजा शांति पायें, मुनि तपस्वी शांति पायें।
राष्ट्र नगर में शांति छाये, शांति जगत् में हे जिन ! आये॥6॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् (9 बार णमोकार मंत्र का जाप करें।)

(दोनों हाथ में चावल या पुष्प लेकर करबद्ध हो विसर्जन पाठ पढ़ें मंत्र के साथ पुष्पाञ्जलि करें)

विसर्जन पाठ

(दोहा)

जाने अनजाने हुई, प्रभु पूजा में चूक।
मैं अज्ञान अबोध हूँ, क्षमा करो सब चूक॥1॥
जानूँ नहीं आह्वान मैं, पूजा से अनजान।
ज्ञान विसर्जन का नहीं, क्षमा करो भगवान॥2॥
अक्षर पद और मात्रा, व्यंजनादि सब शब्द।
कम ज्यादा कुछ कह दिया, छूट गये हों शब्द॥3॥
मिथ्या हो सब दोष मम, शरण रखो भगवान।
तव पूजा करके प्रभु, बन जाऊँ भगवान॥4॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अस्मिन् नित्य पूजाभिषेक विधाने आगच्छत सर्वे देवाः स्वस्थाने गच्छतः-3जः-3स्वाहा।

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(9 बार णमोकार का जाप करें।)

(नोट-दीपक लेकर श्रीजी की मंगल आरती करें।)

(यह दोहा बोलते हुए आशिका ग्रहण करें)

दोहा : गंध पुष्प प्रभु रज यही, इसको शीश झुकाय।
पुष्प लिये आह्वान के, अपने शीश लगाय॥

(तुभ्यम् नमस्त्रि बोलते हुये भगवान को गुरु को नमस्कार करें।)

***

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

अतिशय क्षेत्र धर्मतीर्थ, जिला औरंगाबाद (महाराष्ट्र) द्वारा

आर्ष मार्ग संरक्षक, कवि हृदय, प्रज्ञायोगी, दिगम्बर जैनाचार्य

श्री गुप्तिनंदी गुरुदेव ससंघ का प्रकाशित साहित्य

1. श्री रत्नत्रय आराधना
2. श्री लघु रत्नत्रय आराधना
3. श्री वृहद् रत्नत्रय विधान
4. श्री लघु रत्नत्रय विधान
5. श्री रत्नत्रय भक्ति संहिता
6. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 1)
7. श्री रत्नत्रय संस्कार प्रवेशिका (भाग 2)
8. श्री वृहद गणधर वलय विधान
9. लघु गणधर वलय विधान
10. श्री वृहद नवग्रह शान्ति विधान
11. श्री सूर्यग्रह शान्ति विधान (श्री पद्मप्रभु आराधना)
12. श्री चन्द्रग्रह शान्ति विधान (श्री चन्द्रप्रभु आराधना)
13. श्री मंगलग्रह शान्ति विधान (श्री वासुपूज्य आराधना)
14. श्री बुधग्रह शान्ति विधान (श्री शांतिनाथ आराधना)
15. श्री गुरुग्रह शान्ति विधान (श्री आदिनाथ आराधना)
16. श्री शुक्रग्रह शान्ति विधान (श्री पुष्पदंत आराधना)
17. श्री शनिग्रह शान्ति विधान (श्री मुनिसुव्रतनाथ आराधना)
18. श्री राहूग्रह शान्ति विधान (श्री नेमिनाथ आराधना)
19. श्री केतुग्रह शान्ति विधान (श्री पार्श्वनाथ आराधना)
20. धर्मसूर्य श्री पद्मप्रभ-वासुपूज्य-नेमिनाथ विधान
21. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (बड़ी)
22. श्री नवग्रह शान्ति चालीसा (छोटी)
23. श्री पंचकल्याणक विधान
24. श्री त्रिकाल चौबीसी (लक्ष्मी प्राप्ति) रोट तीज विधान
25. श्री तीस चौबीसी (महालक्ष्मी प्राप्ति) विधान
26. श्री सर्व तीर्थंकर विधान
27. श्री विजय पताका विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री पंच परमेष्ठी (सर्व सिद्धि) विधान
30. श्री विद्या प्राप्ति विधान
31. श्री श्रुत स्कन्ध विधान
32. श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
33. श्री भक्तामर विधान
34. श्री कल्याण मंदिर विधान
35. श्री एकीभाव विधान
36. श्री विषापहार विधान
37. श्री णमोकार विधान
38. श्री जिन सहस्त्रनाम विधान
39. श्री चौबीस तीर्थंकर, लक्ष्मी प्राप्ति बाहुबली-धर्मतीर्थ एवं आचार्य गुप्तिनंदी विधान

40. श्री चन्द्रप्रभु विधान
41. श्री शान्तिनाथ विधान
42. श्री सर्व दोष प्रायश्चित्त विधान
43. श्री रविव्रत विधान
44. श्री पंचमेरु-दशलक्षण-सोलहकारण विधान
45. श्री नंदीश्वर विधान
46. श्री चन्दन षष्टी व्रत विधान
47. आचार्य शांतिसागर विधान
48. आचार्य श्री कुन्थुसागर विधान
49. आचार्य श्री कनककनंदी विधान
50. आचार्य श्री गुप्तिनंदी विधान
51. श्री छ्यानवे क्षेत्रपाल विधान
52. श्री भैरव पद्मावती विधान
53. श्री धर्मतीर्थ आरती संग्रह
54. सावधान (काव्य संग्रह)
55. महासती अंजना
56. कौडियो में राज्य
57. महासती मनोरमा
58. महासती चन्दनबाला
59. विलक्षण ज्ञानी (आचार्य श्री कनककनंदी जी चरित्र कथा)
60. वात्सल्य मूर्ति (गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी स्मारिका)
61. धर्मतीर्थ प्रवेशिका (भाग-1)